शीघ्र घर लौट आऊँगी

जैक्विलिन वुडसन

चित्र: ई. बी. लुईस

शीघ्र घर लौट आऊँगी

जैक्विलिन वुडसन

चित्र: ई. बी. लुईस

माँ के हाथ कोमल और स्नेही हैं.

जब माँ ने अपनी रविवार की पोशाक एक झोले में रखी

तो मेरा दिल धड़कने लगा.

मैंने बहुत प्रयास किया कि मेरे आँसू बहने न लगें.

एडा रुथ, माँ ने कहा, *शिकागो में अश्वेत महिलाओं*

को काम पर रखा जा रहा है

क्योंकि सब पुरुष युद्ध में भाग लेने के लिए चले गए हैं.

माँ ने एक और पोशाक झोले में रख ली.

मैं वहाँ जा रही हूँ.

फिर माँ ने मुझे गोद में उठा लिया और अपने चेहरे से मेरे चेहरे के छूआ.

घर भेजने के लिए मैं कुछ पैसे कमाऊँगी.

बाहर तेज़ वर्षा होने लगी और भूरे रंग के खेत चमकने लगे.

एडा रुथ, माँ ने कहा,

क्या तुम जानती हो कि मैं संसार में सबसे अधिक प्यार तुमसे करती हूँ?

हाँ, माँ. मैंने फुसफुसाकर कहा. *वर्षा से भी अधिक.*

बर्फ से भी अधिक, माँ ने भी फुसफुसाकर कहा,

वैसे ही जैसे हमने सैंकड़ों बार किया है.

या फिर लाखों बार.

जब मैं रोने लगती हूँ तब दादी मुझे संभालती हैं.

चुप हो जाओ, वह कहती हैं. *सब ठीक हो जाएगा.*

चुप हो जाओ, वह कहती हैं. *तुम्हारी माँ शीघ्र घर लौट आएगी.*

लेकिन माँ को गए हुए बहुत दिन हो गए हैं

उसका न कोई पत्र आया है और न ही पैसे आए हैं.

उसे पत्र लिखती रहो, दादी कहती हैं.

मैं वैसी ही करती हूँ.

आज सुबह बर्फ गिरी है.

बिल्ली का एक छोटा काला बच्चा हमारे दरवाज़े पर खरोंच मार रहा है.

आज सुबह गाय ने दूध भी दिया है.

दादी कहती हैं, *तुम जानती हो हम इस बिल्ली के बच्चे का नहीं रख सकते.*

फिर वह एक तश्तरी में थोड़ा सा दूध डाल कर उसे फर्श पर रख देती हैं.

युद्ध चल रहा है.

कई बार तो नाममात्र खाना ही मिलता है.

मक्की की रोटी और खट्टा दूध, सुबह और शाम के समय.

तुम जानती हो कि हम इसे नहीं रख सकते, दादी दोबारा कहती हैं.

बिल्ली का बच्चा दूध पी जाता है.

मेरे पाँव पर वह अपना सिर रगड़ता है

जैसे कि उसे और दूध चाहिए.

और दादी कहती हैं,

इसे प्यार मत करो, एडा रुथ.

यह बहुत दुबला-पतला है. लेकिन बहुत कोमल है.

मेरी गोद में दस रज़ाइयों समान गर्म है.

वैसे ही जैसे माँ के हाथ हैं. मैं बिल्ली के बच्चे की गर्दन रगड़ती हूँ.

बर्फ से भी अधिक, माँ कहती है.

मैं तुम्हें बर्फ से अधिक प्यार करती हूँ.

मैं तेज़ बर्फबारी को देखती हूँ.

मैं याद करने का प्रयास करती हूँ कि माँ की सुगंध कैसी थी.

कभी-कभी चीनी जैसी, और कभी सूर्य जैसी.

कभी-कभी लाइ साबुन जैसी,

जिससे उसके हाथ पीले

हो जाते थे पर पूरी तरह

साफ भी हो जाते थे.

मैं ज़ोर से आँखें झपकती हूँ

लेकिन आँसुओं का बहना

रोक नहीं पाती,

आँसू बह जाते हैं.
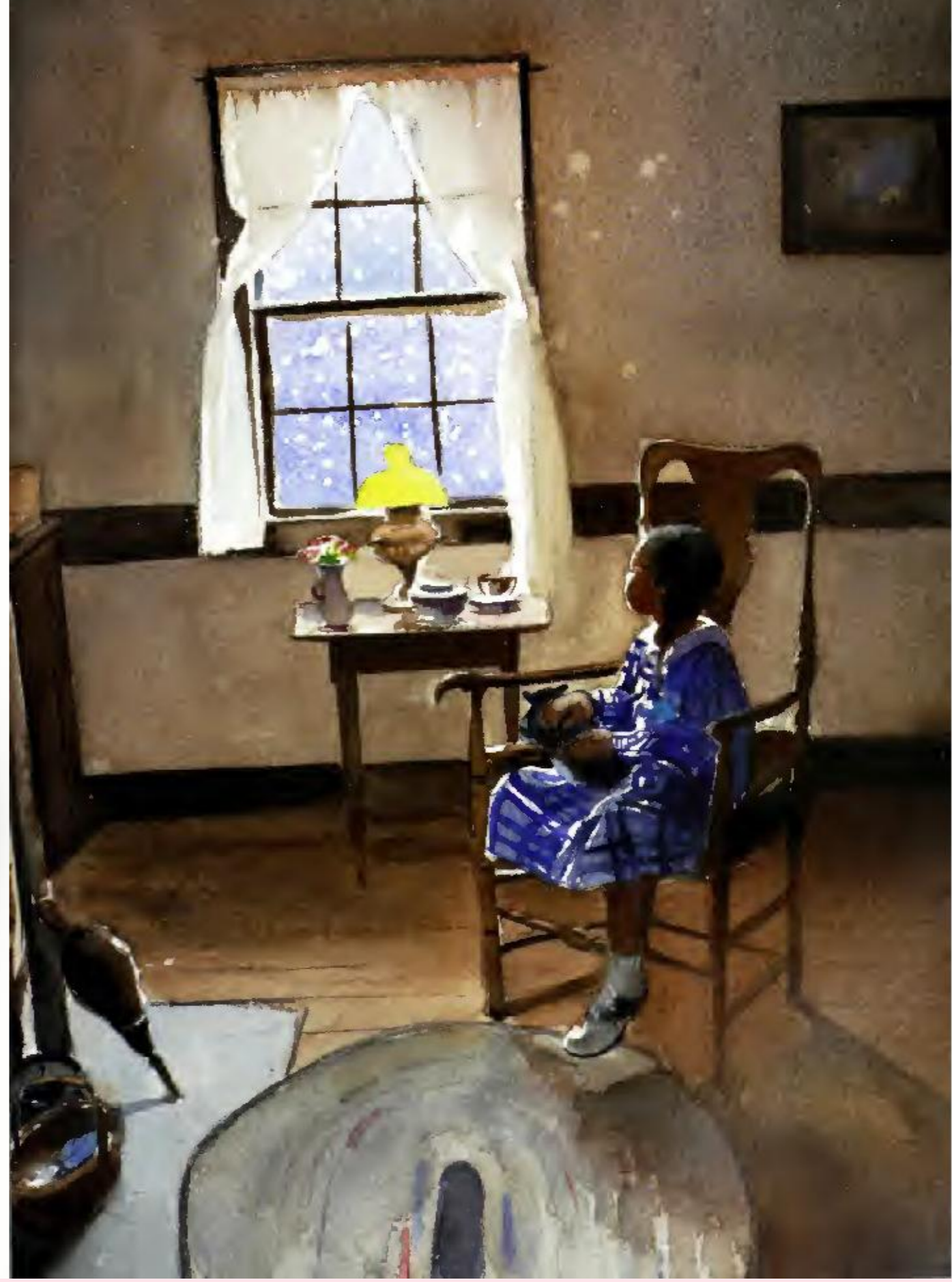
अच्छी बात यह है कि इतनी ठंड में पिस्सु

मर जाते हैं, स्टोर से थोड़ी लकड़ियाँ लाते हुए दादी ने कहा.

अन्यथा यह लकड़ी पिस्सुओं से भरी होती.

वह सिर को एक ओर झुकाती हैं

और बिल्ली के बच्चे को भीतर आने देती हैं.

इससे अधिक गंदा तो नहीं हो सकता, क्या हो सकता है?

मैं और बिल्ली का बच्चा, दोनों गुस्से से दादी को देखते हैं.

समय बीतता है.

जब डाकिया हमारे घर के सामने रुके बिना आगे चला जाता है

तब दादी कहती हैं,

चुप हो जाओ, फिर से रोना शुरु न करो.

लेकिन वह उदास हैं. जैसे कि वह स्वयं भी रोना चाहती हैं.

शिकागो में, माँ ने कहा था, *मैं रेल के डिब्बे साफ कर सकती हूँ.*

कल्पना करो, एडा रुथ, एक अश्वेत महिला रेलवे में काम कर सकती है.

रात के समय मैं और दादी रेडियो सुनती हैं,

हम उन लड़ाइयों के बारे में समाचार सुनती हैं जो लड़ी जा रही हैं और सैनिकों के बारे में भी जो युद्ध में मारे जा चुके हैं. मैं आँखें बंद कर सुनती हूँ. मैं उन सैनिकों के लिए प्रार्थना करती हूँ जो शीघ्र घर वापस नहीं आएंगे.

बाहर बर्फ गिरती जा रही है.

युद्ध चल रहा है, चल रहा है.

जब दादी रेडियो बंद करती हैं, मैं बिल्ली के बच्चे की पीठ सहलाती हूँ.

मैं उन महिलाओं के बारे में सोचती हूँ जो रेलवे में काम करती हैं.

ज़रा सोचे.

माँ उनके साथ है, काम कर रही है

पिछली रात बर्फीला तूफान आया था,

पोसम और खरगोश की तलाश करते हुए दादी कहती हैं.

अगर वह एक पशु पकड़ने में सफल होती हैं

तो खाने के लिए थोड़ा मांस मिल जाएगा.

मेरा एक मन कहता है कि वह एक पशु पकड़ पाएं.

मेरा दूसरा मन करता है कि वह कोई पशु न पकड़ पाएं.

मैं और दादी चलते रहते हैं

बिल्ली का बच्चा कांपते हुए

हमारे पीछे-पीछे आ रहा है.

दादी उसे उठा कर

अपने कोट के अंदर छिपा लेती हैं.

क्या तुम्हें नहीं पता कि अचानक ठंड हो जाती है,

वह पूछती हैं. ठंड *अचानक आ जाती है*

और कई बार कुछ दिन यहाँ रुक जाती है.

दूर-दूर तक भूमि दिखाई देती है, कई जगह

सपाट समतल और किसी जगह ऊँची पहाड़ी जैसी.
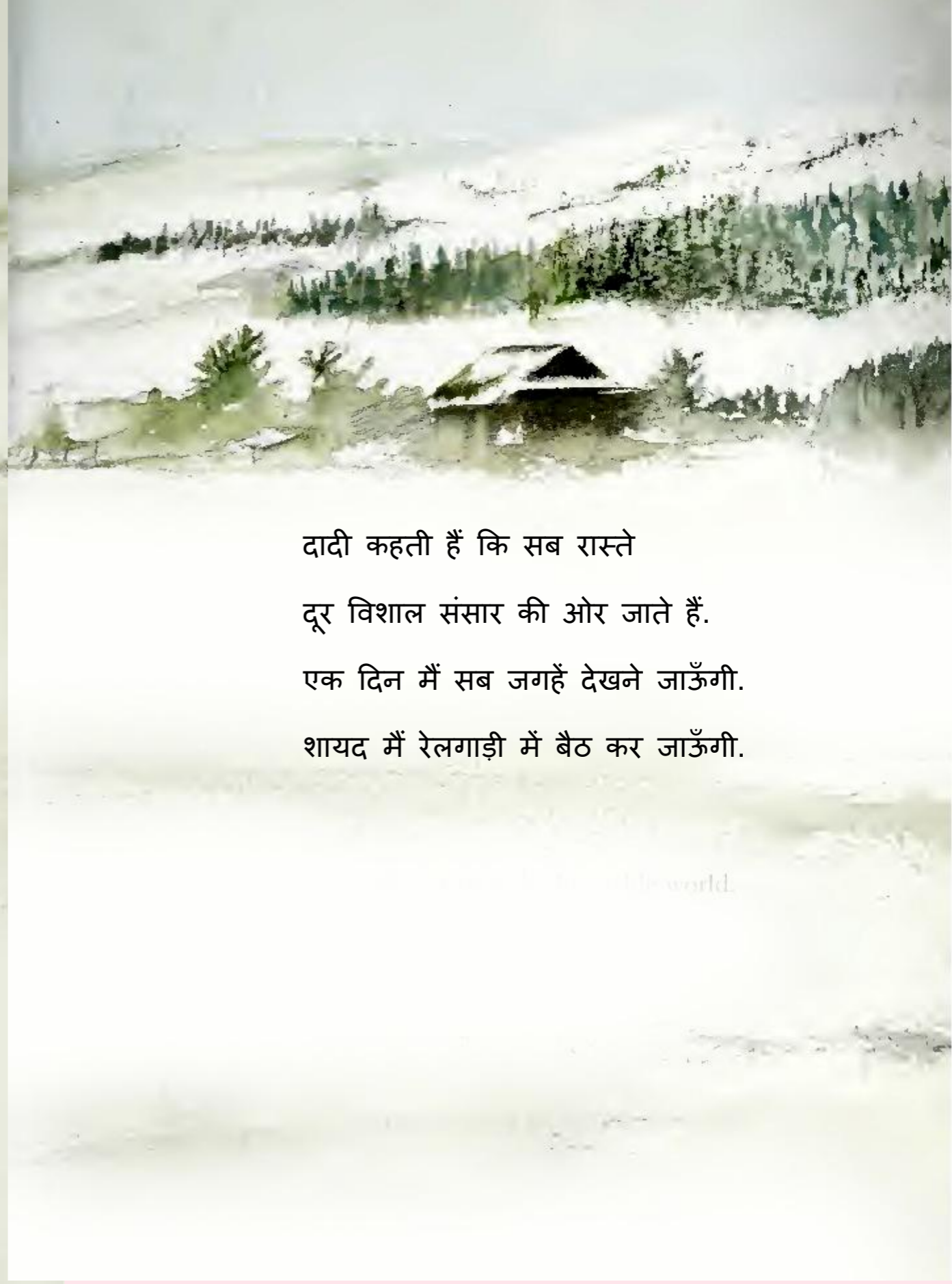
दादी कहती हैं कि सब रास्ते

दूर विशाल संसार की ओर जाते हैं.

एक दिन मैं सब जगहें देखने जाऊँगी.

शायद मैं रेलगाड़ी में बैठ कर जाऊँगी.

जब हम घर पहुँचते हैं तो दादी लकड़ी का चूल्हा जलाती हैं.

हम चूल्हे के पास अपने गीले कपड़े सुखाने के लिए फैला देते हैं.

चूल्हे पर कोको गर्म करते हैं. रात के बचे हुए दो बिस्कुट भी हैं.

डाकिया धीरे-धीरे इधर आ रहा है.
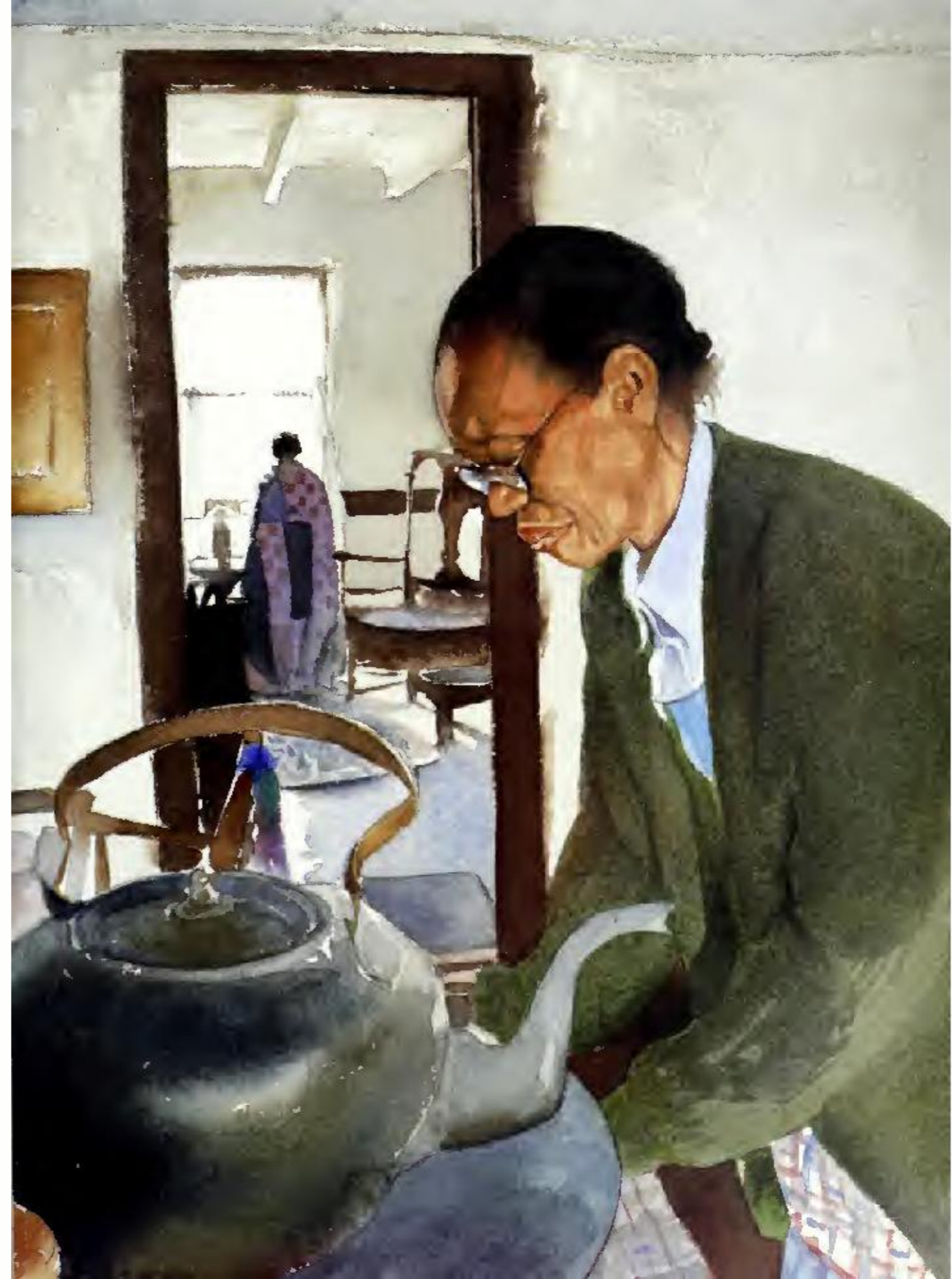
ईश्वर आपका धन्यवाद, दादी बुदबुदाती हैं,

जब डाकिया उन्हें पत्र देता है,

पत्र जिस पर माँ की सुंदर लिखाई में पता लिखा है.

जब दादी पत्र खोलती हैं तो कुछ पैसे बाहर गिरते हैं.

पत्र का पहली लाइन है, *एडा रुथ से कहना.*

मैं शीघ्र घर लौट आऊँगी–

एक गीत के समान मैं इस लाइन को बार-बार गाना चाहती हूँ.
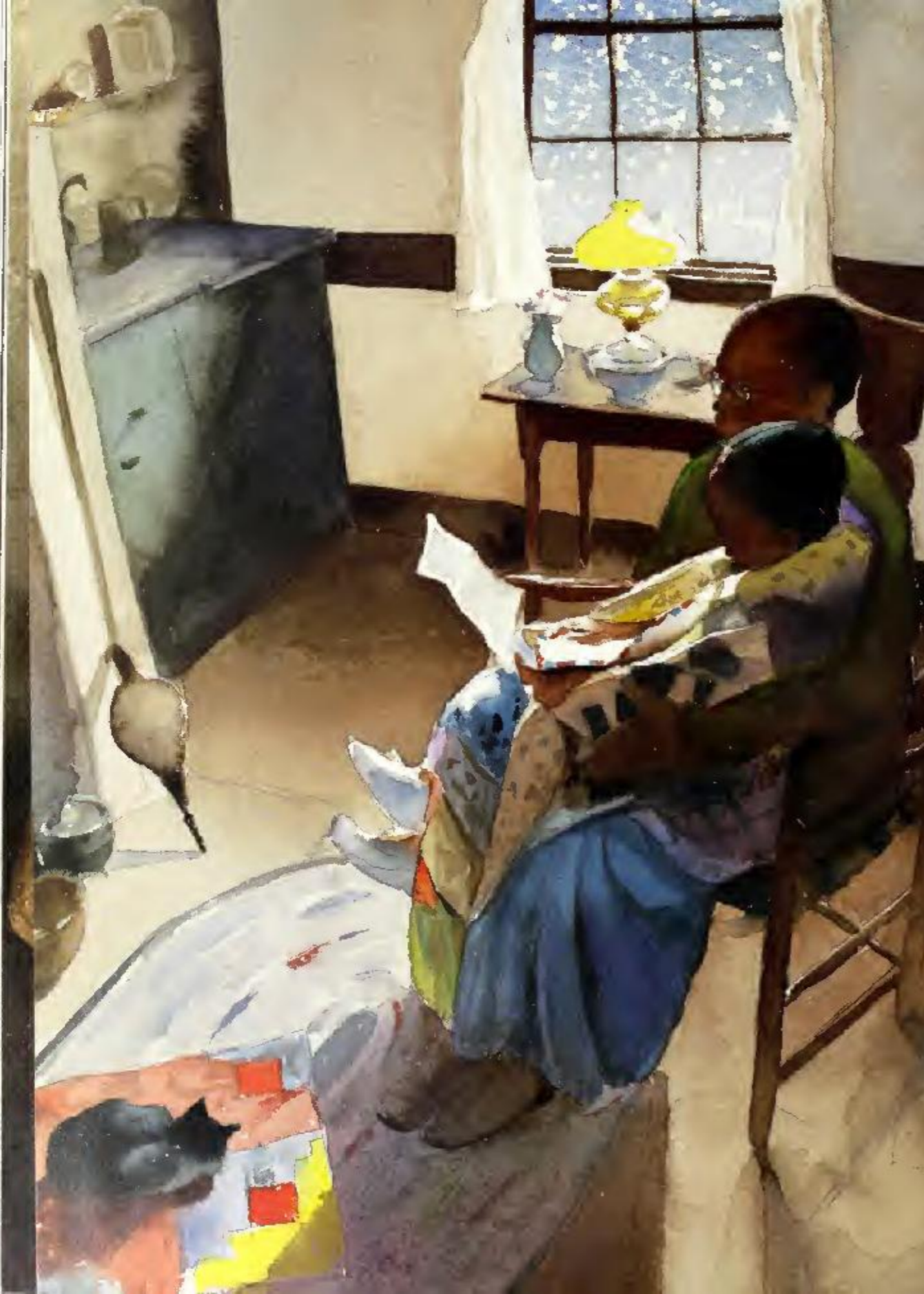
बिल्ली के काले रंग के बच्चे को पास बिठा कर हम उस पत्र को बार-बार पढ़ते हैं.

मुझे लगता है यह बिल्ली का बच्चा यहीं रहना चाहता है,

मैं कहती हूँ.

अरे, उसे बाहर जाने का मन बनाना पड़ेगा,

दादी कहती हैं.

लेकिन दादी फर्श पर चूल्हे के पास एक कंबल बिछा देती हैं और धीमे से कहती हैं, *अगर सही ढंग से देखो तो यह कितना मासूम और सुंदर दिखता है.*

घर के अंदर सब कुछ शांत और आरामदायक है.

चूल्हे पर शोरबा उबल रहा है.

बाहर लगातार बर्फबारी हो रही है.

और कहीं दूर मेरी माँ है

जो मुझे बहुत प्यार करती है,

वर्षा से भी अधिक प्यार करती है,

बर्फ से भी अधिक प्यार करती है,

वहाँ वह रेलगाड़ी साफ करती है,

और शीघ्र घर लौट कर आ रही है.